उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर अभिभावक आकांक्षा एवं दबाव का अध्ययन।

"A Study of Parental Aspirations and Pressure among Higher Secondary Level Students."

DR BALIDAN JAIN
ASSOCIATE PROF.
DEPARTMENT OF EDUCATION
JRN RAJASTHAN VIDYAPEETH
DEEMED TO BE UNIVERSITY
UDAIPUR

Abstract

Parental aspirations play a significant role in shaping the academic, emotional, and psychological development of students, especially at the higher secondary level, which is a crucial stage for career decision-making. While positive parental expectations can motivate students to achieve higher academic goals, excessive aspirations and pressure may lead to stress, anxiety, and reduced well-being among students.

The present study aims to examine the nature and extent of parental aspirations and pressure experienced by higher secondary level students. It seeks to analyze how parental expectations influence students' academic performance, motivation, self-concept, and emotional adjustment. The study also explores variations in parental pressure based on factors such as gender, academic stream, and family background.

The findings of this research are expected to provide valuable insights for parents, teachers, and educational planners to understand the balance between healthy encouragement and undue pressure. The study emphasizes the need for supportive parental involvement that fosters students' academic growth while safeguarding their mental health and overall development.

प्रस्तावना *:–* आधुनिक युग में शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया है। शिक्षा पर संपूर्ण राष्ट्र के विकास का उत्तर दायित्व है। आज केवल शिक्षा की व्यवस्था करना ही नहीं अपितु विद्यार्थियों को उचित दिशा निर्देश देकर मार्गदर्शन भी करना होता है, क्योंकि इसी से शिक्षा के निर्धारित उद्देश्यों व लक्ष्यों की प्राप्ति होती है तथा राष्ट्र विकास की दिशा में प्रयासरत होता है। जहाँ हम दिशा निर्देश तथा मार्गदर्शन की बात करते हैं वहाँ निश्चित नियम व प्रावधान स्वतः ही प्रस्फुटित हो जातेहै। नियम तो प्रकृति के भी पूर्व निर्धारित होते है। सूर्य को प्रतिदिन पूर्व दिशा से उगना ही होता है तथा सूर्य के ढलने के उपरान्त निशा का आना आवश्यक है।

शिक्षा भी कुछ निश्चित नियमों व प्रावधानों के अनुसार ही प्रदान की जाती है। विद्यार्थियों के जीवन में इन्हीं नियमों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है चाहे घर हो, विद्यालय हो या समाज, विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को पूर्व निर्धारित प्रावधानों, मान्यताओं या निश्चित नियमों के अनुसार व्यवहार करना होता है। संतुलित

मात्रा में नियमों का होना तथा तद्नुसार व्यवहार करना व्यक्ति को विकास के पथ पर ले जाता है, लेकिन जहाँ कहीं नियमों की पालना आवश्यकता से अधिक होने लगती है वहाँ जन्म लेता है दबाव।

दबाव तो सामान्य अवस्था में भी बना ही रहता है अन्तर केवल इसकी मात्रा के कम या अधिक होने का ही होता है। सामान्य अवस्था में संतुलित मात्रा में नियमों की पालना करते समय दबाव सामान्य रहता है जो कार्य को निर्विधन पूर्ण करने में सहायक होता है, लेकिन जहॉ यह स्थिति असामान्य हो जाती है अर्थात् नियमों के अनुसार ही व्यवहार करना अनिवार्य हो जाता है तथा किसी भी परिस्थिति में कोई छूट नही होती वहाँ दबाव विकट स्थिति पैदा करते हुए विद्यार्थियों को असंतुलित कर देता है तथा कार्य को बाधित कर देता है।

➢ **दबाव से तात्पर्य :–**

डॉ.सिगमंड फ्रॉयड के अनुसार –

"मनुष्य दुखद, अप्रसन्नकारी और पीडादायक विचारों का दबा देता है क्योंकि इस को स्मृति में रखना दुख, तनाव और कुण्ठा को जन्म देता है जिससे विस्मृति संभव है। अतः स्पष्ट है कि विस्मृति के अनेकानेक कारणों में दबाव भी एक कारण है।"

➢ **आकांक्षा से तात्पर्य :–**

वर्तमान में सभी अभिभावक अपने बालकों के भविष्य निर्माण हेतु इच्छाएँ रखते है कि वे उच्च उपलब्धि प्राप्त करते हुए ऊँचे पदस्थानतक पहुचे। अभिभावकों की ये इच्छाएँ वास्तव में अभिभावकों की आकांक्षाएँ होती है जिन्हें वे अपनी संतानों के संदर्भ पूर्ण होता देखना चाहते है।

कॉलस्निक के अनुसार –"स्वयं के लिए जो लक्ष्य निर्धारित करता है वह व्यक्ति का आकांक्षा स्तर है। यह स्तर कार्य की उस सीमा को कहते है जो व्यक्ति का विश्वास है कि वह सम्पन्न कर सकता है अथवा करने की इच्छा रखता है।"

विद्यार्थियों के जीवन में कई प्रकार के नियम प्रत्येक समय एक साथ कार्य करते रहते है। घर, परिवार, विद्यालय, समाज सभी जगहो के निश्चत नियमों का पालन विद्यार्थियों को चाहे अनचाहे करना ही होता है, क्योंकि घर, परिवार, विद्यालय समाज व राष्ट्र इन विद्यार्थियों से विभिन्न प्रकार की इच्छाएँ, अपेक्षाएँ ओर आकांक्षाएँ बनाए रखते है। इस प्रकार विद्यर्थियों पर इन इच्छाओं, अपेक्षाओं, तथा आकांक्षाओं के अनुसार कार्य करने तथा उपलब्धि प्राप्त करने का दबाव कभी प्रत्यक्ष तो कभी अप्रत्यक्ष रूप से हमेशा ही रहता है।

➢ ***आकांक्षाओं का दबाव से तात्पर्य :–***

बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है, अतः परिवार के सदस्यों की इच्छाओं, अपेक्षाओं एव आकांक्षाओं की पूर्ति के प्रयास स्वरूप भी विद्यार्थियों पर प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष दबाव कार्य करता रहता है। अभिभावक अगर बालक की क्षमताओं के अनुरूप उससे आकांक्षाएँ रखे इसके बाद उसे किसी विशिष्ट क्षेत्र या कार्य में उपलब्धि हेतु प्रोत्साहित करे तो यह मनोविज्ञान की दृष्टि से भी सही होगा एवं ऐसा करते हुए अभिभावक

सकारात्मक सहयोग कर पाएंगे, लेकिन जब अभिभावकों द्वारा अपनी स्वयं की इच्छाओं, आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु बालकों पर बिना उनकी क्षमताओं तथा रूचियों को जाने, किसी प्रकार की अनिवार्यता की जाती है तब यह अवस्था असंतुलित होकर विद्यार्थियों को दबाव की तरफ ले जाती है। कई बार ऐसी परिस्थितियाँ भी आती है जहाँ अभिभावक जो स्वयं के प्रति आकांक्षा रखते थे और जिन्हें वह अपने जीवन काल में अब तक पूरी नहीं कर पाए है को अपनी संतानों के द्वारा पूरा करने कीआकांक्षा रखते हैं तथा न की प्राप्ति हेतु वे अपने संतानों के द्वारा पूरा करने की आकांक्षा रखते हैं तथा इनकी प्राप्ति हेतु वे अपने ही बच्चों के लिए बहुत सारे नियम बना देते हैं या बनाते रहते हैं जैसे–सुबह जल्दी उठकर पढाई करो, टी.वी. मत देखो, यह करो, अभी करो, खेलने मत जाओं, आज पूरे दिन पढाई करो, तुम्हें डॉक्टर/इंजीनियर बनना है।

इस प्रकार की स्थतियाँ विद्यार्थियों को निश्चित नियमों या पूर्व निर्धारित प्रावधानों के अनुरूप व्यवहार करने हेतु बाध्यता स्वरूप प्रतीत होती है। वे अपनी स्वयं की रूचियों, क्षमताओं के अनुरूप प्राकृति रूप से विकास करने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं। विभिन्न शिक्षा नीतियों, आयोगों ने समय पर इस संदर्भ में अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए विद्यार्थियों का विकास नैसर्गिक रूप से करने पर बल दिया है। NCF-2005 में इस विषय पर कहा गया है कि विद्यार्थियों का विकास प्राकृतिक रूप से होना चाहिए इस हेतु उन पर बिना दबाव बनाए उनकी क्षमताओं तथा कौशलों के विकास में सहयोग किया जाना चाहिए।**"सा विद्या या मुक्तये"** विद्या सभी बंधनों से युक्त करने वाली है, लेकिन आज के इस जटिल शिक्षा दौर में विद्यार्थियों पर आवश्यकताओं से अधिक आकांक्षााओं के अनुरूप व्यवहार करने का बाव बनाए रखना कहाँ तक तर्कसंगत है। आज के इस प्रगतिशील युग में व्यक्ति बंधनों से मुक्त नही होता वरन विभिन्न प्रकार के बंधनों से अपने आपको घिरा हुआ पाता है। ये बंधन व्यक्ति को लक्ष्य निर्धारित व्यवहार करने के प्रति बाधित करते है। शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है जो बालक–बालिकाओं के व्यवहार में वातावरण का परिमार्जन करती है। शिक्षा मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि बालकों के व्यवहार में वातावरण प्रदान किया जाए तो वह अपने लक्ष्य का निर्धारण सहज ही कर सकता है।

अभिभावकों की आकांक्षाओं से जो दबाव विद्यार्थियों पर पडता है वो विद्यार्थी के व्यवहार में अनेकानेक परिवर्तन करता है। विद्यार्थी अपने अभिभावकों द्वारा की गई आकांक्षाओं में निश्चित लक्ष्य के अनुसार अपने व्यवहार का परिमार्जन करने का प्रयास करताहै। इन आकांक्षाओं एवं दबाव को देखकर ही शोधार्थी को प्रस्तुत शोध की ओर उन्मुक्त किया। शोधार्थी इन्ही प्रश्नों के उत्तर हेतु व्याकुल है कि विद्यार्थियों के अभिभावकों की उनसे क्या आकांक्षाएँ है तथा उनसे उत्पन्न होने वाले दबाव क्या है?

समस्या कथन :–

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर अभिभावक आकांक्षा एवं दबाव का अध्ययन।''

शोध उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध में निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध प्रक्रिया को गति प्रदान का निर्णय लिया गया :–

- समग्र उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावकों द्वारा दिए गए दबाव ज्ञात करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के अभिभावकों द्वारा दिए गए दबाव ज्ञात करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के अभिभावकों द्वारा दिए गए दबाव ज्ञात करना।
- समग्र उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावकों की विभिन्न आकांक्षाओं के स्तर का पता लगाना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के अभिभावकों की विभिन्न आकांक्षाओं के स्तर का पता लगाना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालय विद्यार्थियों के अभिभावकों की विभिन्न आकांक्षाओं के स्तर का पता लगाना।

परिभाषिक शब्दावली :–

समस्या कथन में उपयोग में लिए गए शब्दों की इस लघु शोधकार्य में व्याख्या इस प्रकार है–

1. **माध्यमिक स्तर :–** इस शोध में उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 12 वीं के विद्यार्थियों से है।
2. **विद्यार्थी:–**इस शोध में विद्यार्थी से तात्पर्य कक्षा 12 वीं में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं से है।
3. **अभिभावक :–** इस लघुशोध में अभिभावक से तात्पर्य उनके माता–पिताओं से है जिन विद्यार्थियों का चयन इस दिशा में किया गया है।
4. **आकांक्षा :–** इस शोध में आकांक्षा से तात्पर्य उन चयनित विद्यार्थियों के अभिभावकों की अभिलाषाओं, इच्छाओं या अपेक्षाओं से है जिनमें वे चाहते हैं कि उनका पुत्र–पुत्री इस दिशा में पूर्णरूपेण क्रियाशील रहे या वे वहाँ तक पहुँचे उन्हें प्राप्त करने में समर्थ रहे है।
5. **दबाव :–** इस अध्ययन में दबाव से तात्पय है कि अभिभावकों द्वारा पुत्र–पुत्रियों से सम्बन्धित अभिभावकों की आकांक्षाओं की पूर्ति, हेतु विद्यार्थियों को दिए गए सामाजिक –आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक एवं शैक्षिक निदशों से है वे जिन्हें पुत्र–पुत्रियों द्वारा चाहे अनचाहे मन से करना पडता है और इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों पर जो दबाव पडता है।

समस्या का औचित्य :–

शोधार्थी शिक्षण के क्षेत्र स विद्यार्थी, अभिभावक व समाज से सीधा जुडा हुआ है और जानना चाहता है कि विद्यार्थियों से अभिभावकों की क्या एवं किस तरह की आकांक्षाएँ होती है? तथा अभिभावक अपनी इन आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु किस तरह से विद्यार्थियों को निर्देशित करते है ? क्योंकि किसी भी शौध का औचित्य उसकी उपादेयता को बनाता है, अतःविभिन्न दृष्टिकोण से इस शोध का औचित्य सर्व दृष्टि से सकारात्मक रहेगा।

1. **अनुसंधानकर्ता की दृष्टि सेः**–पूर्व में इस विषय से सम्बन्धित कई शोध हुए है, परन्तु किसी ने भी अभिभावकों की आकांक्षाओं को जानने एवं उनकी इन आकांक्षाओं की पूर्ति के प्रयास के रूप में उनके द्वारा विद्यार्थियों पर क्या एवं कैसे निर्देशन दिया जाता है, को जानने का प्रयास नहीं किया है। शोधार्थी ने इसे चुनौती के रूप में स्वीकार किया और इसे ज्ञात करने हेतु संकल्पित हुआ।
2. **सामाजिक दृष्टिकोण की दृष्टि से :**–विद्यार्थी और अभिभावक दोनों ही समाज का हिस्सा है, अतः समाज के विकास में इन की आकांक्षाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसी कारण विद्यार्थियों से सम्बन्धित उनके अभिभावकों की आकांक्षाएँ एवं अभिभावकों के द्वारा इन की पूर्ति हेतु दिए गए निदशों का अध्ययन समाज विकास की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम होगा। यह लघु शोध सामाजिक प्राणियों में मनुष्यों को अभिभावक आकांक्षाओं एवं उनकी पूर्ति हेतु दिए गए निदशों से सम्बन्धित संप्रत्यय का वास्तविक ज्ञान करवाएगा।
3. **शिक्षकों के दृष्टिकोण से :–** शिक्षकों का सीधा सम्बन्ध विद्यार्थियों से होता है तथा शिक्षकों को विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास हेतु उनसे सम्बन्धित सभी कारकों को जानकर तदानुसार अध्ययन करवाना होता है। उन कारकों में विद्यार्थियों के अभिभावकों की आकांक्षाएँ एवं उनके द्वारा दिए गए निदर्शे भी महत्वपूर्ण है। जिनका ज्ञान शिक्षकों को विद्यार्थियों को समझने एवं उनका संपूर्ण बिकास करने हेतु सुनिश्चित दिशा बतलाने में मदद करेगा।
4. **शिक्षक–प्रशिक्षका की दृष्टि से :**–इस शोध के संप्रत्यय से भावी शोधार्थियों को भविष्य में विद्यार्थियों के व्यवहार सम्बन्धी कारणों के शोधों सहयोग एवं एक नई दिशा मिल पाएगी। इस शोध संप्रत्यय के अध्ययन से शिक्षक–प्रशिक्षक भावी अध्यापकों को इस प्रकार प्रशिक्षित कर पाएगें कि वे विद्यार्थियों का उचित मार्गान्तीकरण कर सके।
5. **अभिभावकों की दृष्टि से :**–अभिभावक स्वयं अपनी आकांक्षाओं को जान पाएंगे तथा अनुभव कर पाएंगे कि क्या उनके द्वारा अपनी स्वयं की आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु अपने पुत्र–पुत्रियों पर बिना उन की इच्छा/रूचि के अत्यधिक या न्यूनतम दबाव बनाया जाता है? और अगर हाँ तो क्या यह मानवीय एवं नैतिक दृष्टिकोण से उचित है? और क्या वे वास्तव में अपने पुत्र–पुत्रियों पर दबाव बनाते है? यह ज्ञान उन्हे भविष्य हेतु अपने पुत्र–पुत्रियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने में सहयोग प्रदान करेगा।
6. **राष्ट्र की दृष्टि से :–** इस शोध के द्वारा विद्यार्थियों, अभिभावकों, अध्यापकों एवं समाज को उचित दिशा–निदर्शे मिलेगा तो निश्चित ही इस सबका यह सकारात्मक दृष्टिकोण राष्ट्र के विकास में मील का पत्थर साबित होगा।

न्यादर्श :–

इस शोधकार्य के लिए यादृच्छिक प्रतिचयन विधि एवं सोद्देश्यपूर्ण विधि दोनों का उपयोग न्यादर्श चयन प्रक्रिया के अन्तर्गत किया गया। जिनमें बून्दी जिले के एक निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं एक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का चयन किया जायेगा।

शोधकर्ता ने कुल 60 विद्यार्थियों का चयन किया जिसमें 30 विद्यार्थी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय से तथा 30 विद्यार्थी निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय है।

शोधकर्ता ने इन्ही चयनित विद्यार्थियों के अभिभावाकों का चयन किया जिनकी संख्या 60 है।

अध्ययन परिसीमन :– प्रस्तुत शोध का परिसीमन निम्नानुसार है :–

1. यह शोध बून्दी जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित रहा।
2. इस शोध में कक्षा 12 वीं के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

शोध विधि :–

शोध की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्तमान स्थिति पता लगाने एवं दत्तो का व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक रूप से संकलन करने के लिए प्रस्तुत अध्ययन मे **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण :–

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित दो स्वनिर्मित उकपरणों का उपयोग किया जायेगा।

1. अभिभावक की आकांक्षाएँ ज्ञात करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची।
2. विद्यार्थियों पर दबाव ज्ञात करने हेतु प्रश्नावली।

प्रविधि :–

शोधकर्ता ने प्रतिशत व औसत प्रविधि का चयन किया।

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधकार्य **" उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर अभिभावक आकांक्षा एवं दबाव का अध्ययन"** में बून्दी जिले में दबाव का रहना दर्शाया गया तथा उनके चयनित अभिभावकों की आकांक्षाएँ सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक एवं शैक्षिक क्षेत्र में दर्शाई गई।

विद्यार्थियों पर पडने वाले दबाव सम्बन्धी निष्कर्ष

(1) बून्दी जिले के एकीकृत निष्कर्ष

बून्दी जिले के संपूर्ण विद्यार्थियों द्वारा सभी क्षेत्रो में 43.33 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा उच्च, 53.33 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा मध्य तथा 3.33 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा निम्न दबाव का सामना किया जाता है।

(i) सामाजिक क्षेत्र एकीकृत निष्कर्ष

➢ समाजिक क्षेत्र में बून्दी शहर क संपूर्ण विद्यार्थियों में से 76.66 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा उच्च, 20 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा निम्न दबाव का सामना किया जाता है।

(ii) आर्थिक क्षेत्र एकीकृत निष्कर्ष

➢आर्थिक क्षेत्र में बून्दी शहर के संपूर्ण विद्यार्थियों में से 63.33 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा उच्च तथा 36.66 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा मध्य दबाव का सामना किया जाता है।

(iii) मनोवैज्ञानिक क्षेत्र एकीकृत निष्कर्ष

➢मनोवैज्ञानिक क्षेत्र मे बून्दी जिले के संपूर्ण विद्यार्थियों मे से 63.33 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा उच्च, 26.66 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा मध्य तथा 10 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा निम्न दबाव का सामना किया जाता है।

(iv) शारीरिक क्षेत्र एकीकृत निष्कर्ष

➢ शारीरिक क्षेत्र में बून्दी जिले के संपूर्ण विद्यार्थियों में से 30 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा उच्च, 43.33 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा मध्य तथा 26.66 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा निम्न दबाव का सामना किया जाता है।

(v) शैक्षिक क्षेत्र एकीकृत निष्कर्ष

➢ शैक्षिक क्षेत्र में बून्दी जिले के संपूर्ण विद्यार्थियों में से 63.66 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा उच्च, 30 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा मध्य तथा 6.66 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा निम्न दबाव का सामना किया जाता है।

अभिभावकों की आकांक्षाओं के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष

1. अभिभावकों की एकीकृत आकांक्षाओं के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष
    - ➢ औसतन 57.91 प्रतिशत अभिभावकों की आकांक्षाएँ सामाजिक क्षेत्र से सम्बन्धित पाई गई।
    - ➢ औसतन 27.66 प्रतिशत अभिभावकों की आकांक्षाएँ आर्थिक क्षेत्र से सम्बन्धित पाई गई।
    - ➢ औसतन 38.61 प्रतिशत अभिभावकों की आकांक्षाएँ शारीरिक क्षेत्र से सम्बन्धित पाई गई।
    - ➢ औसतन 51.99 प्रतिशत अभिभावकों की आकांक्षाएँ शैक्षिक क्षेत्र से सम्बन्धित पाई गई।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. अमरनाथ (2013) : हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल, प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. ढोंढियाल एस.एन. एवं फाटक, ए.बी. (2006) : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
3. एन.सी.ई.आर.टी. (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा, नई दिल्ली।
4. मेहरोत्रा, आर.सी. : ''सैकण्डरी सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'' एम.बी. बुच, 1972–78, पृ.सं. 296।
5. शर्मा, आर.ए. (1995) : शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
6. शर्मा, राजमणि (2014) : हिंदी भाषा इतिहास और स्वरूप, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. सिंह, लाल साहब (2007) : मापन, मूल्यांकन एवं सांख्यिकी, साहित्य प्रकाशन, आगरा।